May 2020

पैर से खुलेगा पानी का टैब हाथों में आएगा हैंडवॉश

तकनीक

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

हाथ धोने के लिए अब न तो हैंडवाश निकालना और न ही टैब खोलना पड़ेगा। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के वैज्ञानिकों ने ऐसी मशीनरी बनाई है, जो पैरों से चलेगी और हैंडवॉश के साथ पानी का टैब भी खोल देगी। वैज्ञानिकों ने संस्थान में खराब पड़े उपकरणों से यह मशीनरी तैयार की है। इसे फिलहाल मुख्य भवन में लगाया है लेकिन जल्द ही हॉस्टल में भी लगाया जाएगा।

कोरोना संक्रमण से बचने के लिए सार्वजनिक स्थानों पर कोई भी चीज छूना खतरनाक हो सकता है। क्योंकि हाथ बार-बार धोना है, इसलिए वॉश बेसिन का प्रयोग सभी लोग कई बार करेंगे। संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि इस समस्या को देखते हुए वैज्ञानिकों को निर्देश दिया गया था कि कोई इलाज करें। संस्थान के असिस्टेंट प्रोफेसर संजय चौहान और शुगर फैक्ट्री की तकनीकी टीम ने मिलकर यह मशीनरी तैयार की है। इसे

ताकि रहें सुरक्षित

- कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए एनएसआई के वैज्ञानिकों ने तैयार किया सिस्टम
- बेकार मशीनरी से बनाया इक्यूपमेंट, ऑफिस के साथ हॉस्टल में भी होगा प्रयोग

वॉश बेसिन में लगा दिया गया है। पैरों के पास दो लीवर हैं। एक दबाने पर हाथ में हैंडवाश आएगा और दूसरा लीवर दबाने पर पानी का टैब खुलेगा। इससे किसी को हाथ लगाने की जरूरत नहीं होगी और संक्रमण का खतरा नहीं होगा।

एन एस आई ने पैरों से ऑपरेट होने वाली हाथ धोने की मशीन डेवलप की है। संस्थान के निदेशक प्रो नरेंद्र मोहन अग्रवाल ने बताया इस मशीन का यूज बाहर से आने वाले सभी लोग करेंगे। मशीन में सौंप लिक्विड भरा गया है पैर से प्रेस करके हैंड वाश किया जा सकेगा। कोविड 19 के दौर में यह मशीन काफी उपयोगी साबित हो रही है

एनएसआई : पैर से चलने वाली हाथ धोने की मशीन बनाई

कानपुर। नेशलन शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) ने पैर से चलने वाली हाथ धोने की मशीन बनाई है। मशीन के नीचे दो लिवर लगे हैं। एक लिवर को पैरों से दबाने पर तरल साबुन निकलता है और दूसरे को दबाने से पानी। एनएसआई के निदेशक डॉ. नरेंद्र मोहन ने बताया कि कोरोना संक्रमण के फैलाव को देखते हुए ऐसी मशीन की जरूरत थी जिससे हाथ धोने के लिए टोटी न छूनी पड़े। अगला अकादमिक सत्र चालू होने के पहले संस्थान के सभी छात्रावासों में मशीन को लगाया जाएगा। इसके साथ ही संस्थान इस मशीन को सभी चीनी मिलों, डिस्टिलरियों में भी प्रचारित-प्रसारित कर रहा है। यह मशीन और इसकी डिजाइन शुगर इंजीनियरिंग के असिस्टेंट प्रोफेसर संजय चौहान और उनकी टीम ने तैयार की है।

पैर से चलने वाली मशीन से हाथ धोते एनएसआई के निदेशक डा. नरेंद्र मोहन। संवाद

खराब सेनेटाइजर पर अंकुश लगाएगा शुगर इंस्टीट्यूट

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

कोविड-19 वायरस से बचाव के दृष्टिगत सेनेटाइजर का प्रयोग बढ़ने से बाजार में कम गुणवत्ता वाले सेनेटाइजर भी धड़ल्ले से बेचे जा रहे है। इस पर अंकुश लगाने के लिए नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट ने अपने

एल्कोलाइजर व स्पेक्ट्रोफोटोमीटर से होगी सेनेटाइजर उत्पाद की गुणवत्ता की जांच

एनालिटिकल लैब में सेनेटाइजर की गुणवत्ता जांच की सुविधा उपलब्ध कराई है।

सेनेटाइजर की गुणवत्ता की जांच के क्रम में लैब में उसका विश्लेषण किया जाएगा। विश्लेषण के तहत अल्कोहल प्रतिशत, हाइड्रोजन पराक्साइड वह ग्लिसरोल के साथ ही पीएच, स्पेसिफिक ग्रेविटी एवं टरबिडीटी आदि की जांच एल्कोनाइजर एवं स्पेक्ट्रोफोटोमीटर जैसी डिजिटल मशीनों से की जाएगी।

इंस्टीट्यूट निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा है कि इस सुविधा से बाजार में उपलब्ध सेनेटाइजर की गुणवत्ता निर्धारित करने में सुगमता होगी तथा आम लोगों को मानक के अनुसार उत्पाद मिल सकेगा। उन्होंने कहा कि सेनेटाइजर निर्माताओं से संपर्क किया जा रहा है। जांच के लिए कुछ नमूने प्राप्त हुए हैं। उन्होंने बताया कि चीनी मिलों वह अन्य उत्पादकों द्वारा बड़े पैमाने पर सेनेटाइजर का उत्पादन किया जा रहा है। शुगर इंस्टीट्यूट ने भी इस संदर्भ में कई निर्माताओं का मार्ग दर्शन किया है।

नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट ने अपने लैब में उपलब्ध करायी सेनेटाइजर की गुणवत्ता की जांच की सुविधाएं। फोटो : एसएनबी

एनएसआई बताएगा आपका सेनेटाइजर कितना कारगर

हिन्दुस्तान
खास

कानपुर | अभिषेक सिंह

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) अब चीनी की गुणवत्ता के साथ यह भी बताएगा कि आपका सेनेटाइजर कितना कारगर है। वह कोरोना वायरस से आपको बचा रहा है या कई अन्य बीमारियां दे रहा है। संस्थान में सेनेटाइजर की गुणवत्ता की जांच शुरू हो गई है। इसे अनिवार्य करने के लिए निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने केंद्र सरकार को पत्र लिखकर इसके दुष्प्रभाव से अवगत कराया है। उन्होंने किसी भी सरकारी संस्थान या लैब को इसके लिए अधिकृत करने की मांग की है। अभी तक सेनेटाइजर बिना किसी सर्टिफाइड जांच के बाजार में आ रहे हैं। संक्रमण से बचने के लिए हाथों को बार-बार एल्कोहलिक सेनेटाइजर से सेनेटाइज करना जरूरी है। बचाव के इस तरीके की जानकारी होते ही जहां हर व्यक्ति ने इसका प्रयोग शुरू कर दिया है। इन कंपनियों के सेनेटाइजर कितने कारगर हैं, ये बताने वाला कोई नहीं है। नरेंद्र मोहन ने बताया कि इस सवाल को देखते हुए संस्थान की एनालिटिकल लैब में विशेष उपकरण लगाए गए हैं। यहां सेनेटाइजर की टेस्टिंग की जा रही है। टेस्टिंग की रिपोर्ट के बाद संस्थान संबंधित कंपनी को सर्टिफिकेट भी प्रदान कर रहा है। अभी तक देश में कोई भी सरकारी संस्थान या लैब नहीं है, जो सेनेटाइजर की टेस्टिंग टिफिकेट प्रदान करें और लोगों को बता सके कि यह कितना कारगर है।

अत्याधुनिक मशीन का होगा इस्तेमाल : प्रो. ने बताया कि लैब में एल्कोलाइजर, स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, डिजिटल मशीन समेत अत्याधुनिक उपकरण लगाए गए हैं। इसके माध्यम से सेनेटाइजर में एल्कोहल का प्रतिशत, हाइड्रोजन परआक्साइड की मात्रा, ग्लिसरोल का प्रतिशत, स्पेसिफिक ग्रेविटी, टर्बिडिटी की जांच की जा रही है।

बाजार में मिल रहे एक दर्जन सेनेटाइजर के नमूने फेल

प्रो. मोहन के मुताबिक वैज्ञानिकों की टीम ने बाजार में मिल रहे एक दर्जन से अधिक सेनेटाइजर के नमूनों की जांच लैब में की। सभी सैम्पल फेल हुए हैं। किसी में एल्कोहल 91 फीसदी तक मिला तो किसी में हाइड्रोजन परऑक्साइड की मात्रा 0.125 के बजाए 0.3 मिली। इससे ये सेनेटाइजर या तो कोरोना वायरस के संक्रमण से आपको सुरक्षित नहीं रखेंगे या फिर हाथों में रूखापन व स्किन डिजीज जैसी बीमारी दे देंगे।

पांच कंपनियों को लेकर चल रही है टेस्टिंग

प्रो. नरेंद्र मोहन के मुताबिक वर्तमान में पांच कंपनी के सेनेटाइजर की टेस्टिंग चल रही है। इसमें महाराष्ट्र, शाहजहांपुर, फैजाबाद की कंपनियों ने सैम्पल जांच के लिए भेजे हैं। उन्होंने बताया कि शुगर इंडस्ट्री बड़े पैमाने पर सेनेटाइजर बना रही हैं। इन्हें पत्र लिखकर जांच कराने को कहा गया है।

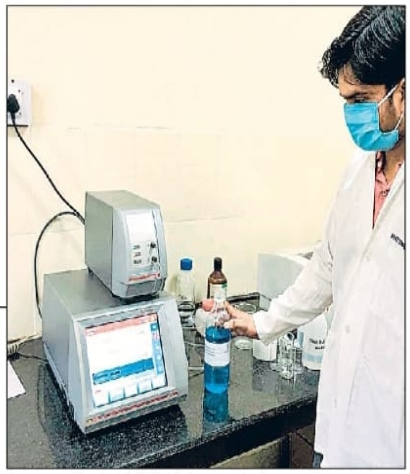

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की एनालिटिकल लैब में विशेष उपकरण लगाए गए हैं। • हिन्दुस्तान

चीनी मिलों की डिस्टलरियों में एल्कोहल युक्त सेनिटाइजर का उत्पादन शुरू हुआ

कानपुर, 8 मई। कोविड-19 की महामारी के मददेनजर सरकार और चिकित्सा विशेषज्ञकों की ओर से व्यक्तिगत साफ-सफाई हेतु दिशा-निर्देश जारी किये गये हैं, जिनमें एल्कोहल युक्त सेनिटाइजर का प्रयोग भी शामिल है। देश में सेनिटाइजर की मांग को देखते हुए चीनी मिलों से सम्बद्ध डिस्टलरियों एवं अन्य उत्पादकों द्वारा बड़े पैमाने पर एल्कोहल युक्त सेनिटाजर का उत्पादन शुरू किया गया है। सेनिटाइजरों को बनाने के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की ओर से चीनी मिलों को एल्कोहल युक्त सेनिटाइजर बनाने के लिए सुझाव दिये गये थे, ताकि विशेषकों के मुताबिक गुणवत्ता युक्त सेनिटाइजर बाजार में आसानी से उपलब्ध हो सके। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की ओर से इन एल्कोहल युक्त सेनिटाइजर के विश्लेषण हेतु विशेष प्रबंध संस्थान की एनालयटिकल लैब्रोटरी में किये गये हैं। संस्थान में अत्याधुनिक डिजिटल मशीनों तथा एल्कोलाइजर एवं स्पेक ट्रोफोटोमीटर इत्यादि द्वारा किया जा रहा है। संस्थान के निदेशक डा. नरेंद्र मोहन ने बताया कि संस्थान से कई निर्माताओं द्वारा संपर्क किया जा रहा है एवं कई सेनिटाइजर के नमूने प्राप्त भी हो चुके हैं। इससे बाजार में उपलब्ध सेनिटाइजरों की गुणवत्ता नियंत्रण में सुगतमा होगी और ग्राहकों को मानक के अनुसार उत्पाद मिल सकेगा।

सेनिटाइजर को जांचता वैज्ञानिक।

• एनएसआई से संपर्क कर रहे सेनिटाइजर निर्माता, कई नमूने भी प्राप्त हुए